मालवा की लोककला का प्रबंधन लोकप्रिय कला संजा के विशेष संदर्भ में

भारद्वाज कुमकुम एवं सोनी शीतल
चित्रकला विभाग, महारानी लक्ष्मीबाई शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, इन्दौर, भारत

मालवा मध्यप्रदेश का हृदय स्थल है। यहाँ पर सांस्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक तथा प्राकृतिक अनुकूल वातावरण के साथ ही लोक संगीत एवं लोककला भी समृद्ध है। मालवांचल की लोकप्रिय लोककला ''संजा'' सम्पूर्ण रूप से लोककला एवं लोकगीतों से परिपूर्ण है। संजा लोककला एवं लोकगीतों के उत्सव पर जन–आनंद अभिभूत होता है। मालवांचल में संजा लोककला, लोककथा एवं लोकगीत उसी तरह स्थित हैं, जिस तरह मानव शरीर में हृदय!''

संजा लोकपर्व मालवांचल में श्राद्ध पक्ष में (प्रत्येक वर्ष भादव माह की पूर्णिमा से अश्विन माह की अमावस्या तक) मनाया जाता है, यह पर्व कुवॉरी कन्याओं द्वारा बड़ी आस्था एवं उमंग से मनाया जाता है। प्रतिदिन संध्याकाल को गोबर द्वारा संजा का अंकन कर उसे रंग–बिरंगे फूलों से सुसज्जित कर सर्वाधिक आर्कषक बनाना ही हर कन्या का उद्देश्य होता है। वह चाहती है कि उनकी बनाई संजा सबसे सुन्दर और आकर्षक लगे। तद्पश्चात सामूहिक रूप से मोमबत्ती जलाकर संजा के गीत एवं आरती गाई जाती है। बालिकाओं द्वारा संजा–आकृतियाँ प्रतिदिन बदल–बदलकर बनायी जाती है। यह तिथिनुसार अपना रूप लेती है। जैसे पूनम पर पूनम पाटला, पाँच टिपके तथा एकम पर एक तलवार, एक ढाल इत्यादि तिथिनुसार ही आकृतियाँ अंकित की जाती है। सोलह दिनों तक गीतों को गाकर प्रतिदिन आरती की जाती है और प्रसाद बाँटा जाता है।

मालवा की भाँति अन्य अंचलों एवं प्रदेशों में संजा को भिन्न–भिन्न नामों से पुकारा जाता है। जैसे–निमाड़ में सांजा फूली, राजस्थान में संझया, बुन्देलखण्ड में सुआटा पर्व, महाराष्ट्र में गुलाबाई तथा हरियाणा एवं मिथिलाप्रदेश में सांझीझूला।

संजा लोक पर्व में चित्रकला, मूर्तिकला एवं गीत संगीत का मधुर समावेश पाया जाता है। इस कलापर्व पर हर कलाकर्म अपनी अनूठी छाप छोड़ता है। संजा की आकृति की कल्पना करना उसे चित्रांकन करना, उसे उकेरने के पश्चात् उसकी सजावट करना सभी का अपना–अपना महत्व है।

संजा आकृति बनाने के लिए सर्वप्रथम गाय का गोबर लाकर आँगन की कच्ची या पक्की दीवार पर कैनवास बनाया जाता है और उसी के अंदर हर दिन संजा की अलग–अलग आकृति तिथि क्रम के अनुरूप बनाई जाती है। संजा के गीत गाकर पूजन एवं आरती की जाती है। सर्वप्रथम बनाए हुए केनवान जिसे परकोटा कहा जाता है के अंदर चाँद सूरज और ध्रुवतारा नियमित रूप से बनाया जाता है, तथा सोलह दिनों की आकृतियों को इस प्रकार तिथिनुसार बनाया जाता है। पूनम–पूनम पाटला, एकम–एक ढ़ाल, एक तलवार, बीज–बीजोरा, तीज–घेवर, चौथ–चौपड़, पाँचम–पाँच कुवारा, छठ–छबड़ी, सातम–सातिया, सप्तऋषि, आठम–अठकली फूल, नवमी–डोकरा–डोकरी, दशमी–दस दीये, ग्यारस–केल का पेड़, बारस–खजुर का पेड़, तेरस से सम्पूर्ण किलाकोट बनाया जाता है जसमें पूनम से बारस तक की सम्पूर्ण आकृतिया आती है तथा संजा बाई की बैलगाड़ी भी बनाई जाती है। किलाकोट के बाहर दो महिला आकृतियाँ मुख्य द्वार के दोनों ओर होती है जिन्हें जाड़ी जसोदा और पतली प्रेमा कहा जाता है मुख्य द्वार पर एक निसरणी पर एक ढोली होता है, द्वार के बाहर एक मेतर बनाया जाता है। इन सभी आकृतियों का संजा के कही ना कही नित्य प्रतिदिन से जुड़ाव होता है फिर इन आकृतियों को फूलों, पत्तियों तथा चमकीली पन्नियों से सजाकर पूजा आरती की जाती है। यह पर्व सतत् रूप से कुवारी कन्याओं द्वारा होता है विवाह के उपरान्त प्रथम वर्ष में ही विवाहित कन्या द्वारा इस पर्व का उद्यापन किया जाता है।

मालवा में यह लोक कला बड़ी ही उत्साह के साथ मनाई जाती है, मालवा स्थित इन्दौर में लोकसंस्कृति मंच के अंतरर्गत विगत कई वर्षों से संजा लोककला के उत्सव का उत्साह बनाए रखने हेतू कई कदम बढ़ाए गए है जो कि बहुत ही सराहनीय है विगत वर्ष इन्दौर के राजवाड़ा क्षेत्र में सबसे विशाल 30x30 फीट की संजा अंकन कर ''गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड'' में अपना नाम दर्ज कराया इससे पूर्व सबसे अधिक प्रतिभागी कन्याओं द्वारा बनाई गई सबसे लंबी संजा का भी वर्ल्ड रिकार्ड यह संस्था बना चुकी है। मालवा अपने रंग बिखेरने में कही पीछे नहीं हट रहा है। लगातार लोककला के उत्साह को बनाए रखने के लिए अग्रसर रहा है।

जहां तक संजा के गीतों का सवाल है; यह हर कहीं प्रायः एक से ही है, थोड़े–बहुत हेर–फेर के साथ। यह बदलाव स्थानीय प्रभावों एवं विभिन्न भाषाओं व बोलियों के कारण है।
संजा में मालवी गीतों की संख्या लगभग 50 से ज्यादा है। जो मालवी भाषा की प्रमुखता लिए हुए है तथा संजा पर्व में 3 कथाएँ भी कही

गई है परंतु संजा अंकन के समय सिर्फ लोक गीतों का गायन किया जाता है, कथाएँ नहीं बोली जाती है। हिन्दू धर्म में कोई भी व्रत या पर्व बिना कथा पूण नहीं होता परंतु इस लोकपर्व में कथा का कहना जरूरी नही होता है। सिर्फ गीतों को ही गाया जाता है। परन्तु आधुनिक युग में गीत तो उपलब्ध हो जाते है किन्तु उन्हें गाने के लिए समूह तथा धुन की कमी आती जा रही है।

नगरीय जीवन के बदलते जीवन मूल्यों के घेरे में मालवा की लोककला डगमगाती जा रही है। गाँव की कच्ची दीवारों पर टीमटीमाते सांस्कृतिक दीपों को नगरों की आंधी बुझाना चाहती है। मालवा के नगरेां में पनप रही संस्कृति गाँवों से भिन्न है, इसी प्रकार सड़क सीमा गाँव एवं सड़क से दूर बसे गाँवों की संस्कृति में अंतर है। वस्तुतः सड़क ''शराब की दुकान'' ''बिजली की चमक'' तथा असंतुलित शिक्षा ने मालवा की मौलिक संस्कृति को तोड़ने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। सड़क सुविधा ने आवागमन के साधन सुलभ कर दिये हैं इससे अनेक विघटनकारी तत्वों का समावेश सुगम हो गया यथार्थ ही ग्रामीण जीवन शांत एवं स्थिर सरोवर की भाँति है, तथा नगरीय जीवन भगोनी में उबलता हुआ पानी।

आधुनिक जीवन की चुनौतियाँ मालवा की शुद्ध संस्कृति को निगल जाना चाहती है। विद्वानों का एक समूह इसे ''विकास वाद्'' कहता है। दूसरा समूह इसे ''संस्कृति का सव्रनाश'' के रूप में स्वीकारता है यह प्रश्न मालवा का ही नहीं वरन विश्व के विचार मंच पर खड़ा सुलझाव की प्रतीक्षा कर रहा है। मेरी दृष्टि में नागरीय रूचियों का प्रवाह, सांस्कृतिक विसंगतियों का विकास है। इसे जल्द से जल्द रोकना होगा।

यहा दो बाते महत्वपूर्ण है। मालवा की संस्कृति की सुरक्षा एवं इसका विकास इस हेतु हमें अपने परिवारों में सांस्कृतिक तत्वों का अधिकार अधिक समावेश करना होगा। फिल्मी गीतों के स्थान पर लोकगीतों की रसधार प्रवाहित करनी होगी। सिनेमा घरेां से हट कर लोकनाट्यों में आनंदित होना होगा। लोक कथाओं के महत्व को समझना होगा। सांस्कृतिक परंपरा, रीति–रिवाजों का पालन करना होगा।

हमारे पूर्वजों के सांस्कृतिक पुण्यों का प्रतिफल हमें मिल रहा है। किन्तु हमारे पुण्य चुक गये अतः आने वाली पीढ़ियों के संस्कारों में विघटन आता जा रहा है। इसके लिये हम स्वयं दोषी है। विवाद में न उलझ कर सांस्कृतिक धरोहर को सम्भालने की दिशा में अग्रसर हो जाना चाहिए और जो संस्थाएँ पहले से ही अग्रसर है युवाओं को मिलकर उन संस्थाओं का सहयोग करना चाहिए यह अत्यंत ही हर्ष का विषय है।

यहाँ का सामान्य–जन लोक संस्कृति की ओर आकर्षित हो रहा है। क्योंकि जीवन जीतना चाहे प्रगतिशील हो जाए लोक के बिना वह अधुरा ही रहता है। लोक जीवन में ही समग्रता रहती है। जो उत्साह और उत्सव का भाव है वही यहाँ भी उल्लासीत होता है।

मालवा की लोककला और लोक धाराओं के अटूट प्रवाह के वाहक अर्थात् संजा लोक कला के चितेरे प्रायः अनजाने ही रहे है। हम नही जानते उनके नाम कुल जिन्होंने मालवा को इस मोहक एवं आकर्षक कला उत्सव को अपनी कल्पनाशक्ति से साकार कर दिया। आज यह पद्धतियाँ संकलित और सुरक्षित हैं, वे कितनी सार्थक हैं इसका परीक्षण कर प्रयोग आज के कलाकार नही कर पा रहे हैं। शायद उसे धैर्य और निष्ठा की आज आवश्यकता है। जो समय के साथ क्षीण होती गयी।

(Received 9th January 2019, accepted 26th January 2019)